भारत में इस परियोजना को लागू करना एक टेड़ी खीर जरूर है, परंतु असंभव नहीं है। इसके लिए हम सभी को आपस में मिलकर सर्व-सम्मति बनानी होगी एवं सामूहिक प्रयास करने होंगे।

न केवल जल संरक्षण परियोजनाओं की एक श्रृंखला है अपितु जल संकट का निवारण भी है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में नदी जोड़ परियोजना के क्रियान्वित करने के पक्ष में दिए गए स्पष्ट निर्णय से यह दावा और भी प्रबल हो जाता है।

राजनीतिक व एन.जी.ओ. कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध प्रदर्शन, लालफीताशाही, कानूनी अड़चन, पर्यावरण चिंताओं, भूमि अधिग्रहण पर अनावश्यक कानूनी कारवाई और राज्य सरकारों द्वारा पेशगी प्रीमियम राशि की मांग से साबित हो जाता है कि कोई भी बड़ी परियोजना शुरू करना बेहद मुश्किल काम है। इसके बावजूद भी भारत में इस परियोजना को लागू करना एक टेड़ी खीर जरूर है, परंतु असंभव नहीं है। इसके लिए हम सभी को आपस में मिलकर सर्व-सम्मति बनानी होगी एवं सामूहिक प्रयास करने होंगे। इस परियोजना में हमारे द्वारा आज किया गया निवेश हमारे आने वाली पीढ़ियों के स्वर्णिम कल को निर्धारित करेगा।

संपर्क करें :
श्री मनीष कुमार नेमा,
वैज्ञानिक - बी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रुड़की (उत्तराखण्ड)

मैं नदी हूँ

शशांक मिश्र भारती

मैं नदी हूं जल की धारा
उठना-गिरना धर्म हमारा
मधुर-सा गान सुनाती हूं
नित आगे बढ़ती जाती हूं।

मैं न कभी भी रुकती हूं
सदा ही बहती रहती हूं
ऊंचे पर्वत झरनों के संग
कल-कल करती बहती हूं।

मैं पाषाणों में भी नृत्य कर
सुन्दर राग सुनाती हूं
जंगल हो या शहर-गांव
रास्ता बनाती जाती हूं।

प्रत्येक गांव और शहर को
मैं अपना स्नेह लुटाती हूं
कल-कलकर गीत सुनाती
पहाड़ से सागर तक जाती हूं।

हरियाली है मुझको भाती
पत्थर भी मुझमें चलते हैं
मेरे संग मनमोहक-सा
मधुकर भी गुंजन करते हैं।

रुकना मेरा काम नहीं है
सदा ही चलती रहती हूं
तुम भी कार्य में लगे रहो
बहकर मैं तुमसे कहती हूं।।

संपर्क करें :
श्री शशांक मिश्र भारती
राजकीय इण्टर कालेज दुबौला रामेश्वर
पिथौरागढ़-262529
(उत्तराखण्ड)